International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070
Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialsciencejournal.in
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 68-70

सीधी जिले में छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व विकास में अध्यापक शिक्षा की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ0 मृगेन्द्र सिंह परिहार
प्राचार्य – शिक्षा महाविद्यालय, सीधी, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र सीधी जिले में छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व विकास में अध्यापक शिक्षा की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध यह निष्कर्ष पाया गया कि शोध क्षेत्र में ग्रामीण एवं शहरी छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व विकास में सार्थक अन्तर पाया गया एवं व्यक्तित्व विकास और अध्यापक शिक्षा की भूमिका में कोई सार्थक सहःसम्बन्ध नही पाया गया।

मूल शब्द : छात्राध्यापकों, व्यक्तित्व विकास, सीधी जिले।

प्रस्तावना
शिक्षा जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा का आधार है। श्रेष्ठ शिक्षा जीवन को उन्नत बनाने की प्रेरणा देती है। मानव मूल्यों की रक्षा, प्रतिष्ठा एवं सम्वर्धना भी शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। वास्तव में देखा जाय तो शिक्षा समाज में चलने वाली सतत् प्रक्रिया है, जिसमें सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए बालक का सर्वांगीण विकास उसकी रूचियों, योग्यताओं एवं क्षमताओं के अनुकूल करने का प्रयास करती है। असल में शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों को न आधुनिकता की ऑधी में ढकेलने, न रूढ़िवादी परम्पराओं में, बल्कि उन्हें वांछनीय–अवांछनीय, सही–गलत, न्याय–अन्याय के बारे में सोचने एवं फैसला करने में सक्षम बनाए।
प्रत्येक राष्ट्र का नैतिक उत्तरदायित्व उसके अपने समस्त नागरिकों को सामान्य शिक्षा उपलब्ध कराने का होता है, क्योंकि शिक्षा ही ऐसे नागरिकों को तैयार करती है जो सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक तीनों ही क्षेत्रों में अपने देश की प्रगति का कर्णधार बन सके। इसलिए यदि दृष्टिपात किया जाय तो ऐसे देश आज विश्व की अग्रणी पंक्ति में है, जहाँ शिक्षा का प्रचार–प्रसार अन्य देशों की तुलना में उत्तम है।
समाज अपनी आवश्यकतानुसार शिक्षा के उद्देश्यों में परिवर्तन करता आया है, फलस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र भी परिवर्तन हुए है। प्राचीनकाल में शिक्षा का उद्देश्य 'सा विद्या या विमुक्तये' था। क्रमशः आवश्यकताओं के असीमित होने से इसके उद्देश्यों में भी परिवर्तन हुआ है।
शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। यदि किसी भी व्यक्ति को जीवन में सफलता प्राप्त करनी है, तो शिक्षा उसके लिए अति आवश्यक है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है।
व्यक्तित्व के निर्माण में मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। एक व्यक्ति का व्यक्तित्व अन्य पक्षों के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के मूल्यों का संगठन होता है। प्रपात एवं श्रीवास्तव (1982) ने मूल्यों को व्यक्तित्व निर्माण के संगठन में महत्वपूर्ण माना है। रेसूचर (1969) ने मूल्यों को योग्यताओं, व्यवहार व किसी विशिष्ट उद्देश्यों के प्रति समर्पित होना माना है। कोई भी कार्य जो किसी व्यक्ति की इच्छा पूर्ति करता है, सामान्य रूप से मूल्य के रूप में माना जाता है। वह व्यक्ति की मूल्य प्रवृत्तियों, रूचियों एवं अभिव्यक्तियों को इंगित करता है। स्प्रेन्जर (1928) ने मूल्यों को एक व्यक्ति की अंतनिर्हित प्रेरणाओं एवं रूचियों के रूप में परिभाषित किया है। कुलम होम (1981) के शब्दों में "मूल्य इच्छाओं के वे प्रत्यय है, जो चयनात्मक व्यवहार के लिए आवश्यक होते हैं।" ये एक प्रकार की अभिवृत्तियॉ भी होती है जो प्रतिमानों के रूप में कार्य करती है तथा जिनके द्वारा निर्णयों का मूल्यांकन होता है।
शिक्षा मानव को एक आदर्श व्यक्तित्व प्रदान करती है। सामान्यतः व्यक्तित्व से अभिप्राय, व्यक्ति के रूप, रंग, कद अर्थात् शारीरिक संरचना, व्यवहार तथा मृदुभाषी होने से लगाया जाता है। ये समस्त गुण व्यक्ति के समस्त व्यवहार का दर्पण है। व्यक्तित्व में विद्यार्थी के न केवल शारीरिक और मानसिक गुणों का विकास होता है वरन् उसके सामाजिक गुणों का भी समावेश होता है। किन्तु इतने से भी व्यक्तित्व का अर्थ पूर्ण नही होता है। कारण यह तभी संभव है जब एक समाज के सभी सदस्यों के विचार, संवेगों के अनुभव और सामाजिक क्रियाएं एक सी हो। ऐसी दशा में व्यक्तित्व का प्रश्न ही नही रह जाता है। इसलिए मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि व्यक्तित्व मानव के गुणों लक्षणों, क्षमताओं, विशेषताओं आदि की संगठित इकाई है।

अध्ययन का उद्देश्य
किसी समस्या की समाधान प्राप्ति हेतु शोधकार्य किया जाता है, जिसके उद्देश्य निर्धारित किये जाते हैं और इन उद्देश्यों की प्राप्ति ही शोध समस्या का समाधान होता है। प्रत्येक शोधकर्ता को शोधकार्य करने से पूर्व ही उसके अध्ययन के उद्देश्यों का निर्धारण कर लेना अतिआवश्यक होता है, जो कार्य लक्ष्य का ज्ञान करके किया जाता है वह सार्थक होता है। पूर्व निर्धारित उद्देश्य शोध क्रिया को सही मार्ग पर अग्रसर कर उन्हें सफल बनाते हैं। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री जॉन डी0वी0 के अनुसार – *''उद्देश्य पूर्व दर्शित लक्ष्य है जो किसी कार्य को संचालित करता है तथा व्यवहार को प्रेरित करता है''*।
अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित उद्देश्य है–
1. सीधी जिले में शोध समस्या की वस्तुस्थिति ज्ञात करना।
2. सीधी जिले में छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व गुणों, विकास एवं

अध्यापक शिक्षा की भूमिका को प्रभावित करने वाले कारको का पता लगाना।

3. सीधी जिले में अध्यापक शिक्षा की भूमिका के समक्ष आने वाली समस्याओं की जानकारी प्राप्त करना।

शोध परिकल्पना

मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक अनुसंधान का प्रारंभ जब होता है, जबकि एक समस्या हो। समस्या की अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण साधन परिकल्पना है। शैक्षिक अनुसंधान में समस्या चयन के बाद परिकल्पनाओं की रचना शोध प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है। परिकल्पना से समस्या समाधान को उचित दिशा निर्धारित होती हैं परिकल्पनाओं द्वारा अनुसंधानकर्ता को तर्क संगत आंकड़ों के संकलन में ठीक दिशा मिलती है। भौतिक विज्ञानों में एक ही परिकल्पना को लेकर उसका परीक्षण करते हैं, किन्तु शैक्षिक अनुसंधान में अनेक परिकल्पनायें लेते हैं और प्रत्येक की सत्यता का परीक्षण करते हैं। अतः परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर है। प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नानुसार हैं:–

1. "सीधी जिले में ग्रामीण एवं शहरी छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व विकास में सार्थक अन्तर है।"
2. "सीधी जिले में छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व विकास में अध्यापक शिक्षा की भूमिका में सार्थक सहःसम्बन्ध पाया गया है।"

अध्ययन का परिसीमन

शोध कार्य का क्षेत्र जिला सीधी है। इसके अन्तर्गत 5 विकासखण्ड–कुशमी, मझौली, रामपुर नैकिन, सीधी व सिहावल हैं।

न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। जिले के 5 ग्रामीण एवं 5 शहरी विद्यालयों में से कुल 10 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा अध्ययन हेतु किया गया। शोध कार्य के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 5–5 छात्राध्यापकों को आधार मानकर चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया है।

शोध विधि

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन के विधिवत सम्पादन के लिए निम्न शोध विधियों का चयन किया गया है–

i) सर्वेक्षण अध्ययन विधि

सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।

ii) साक्षात्कार विधि

शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।

iii) साख्यिकीय विधि

सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियाँ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), r, S.D., Chisquare test, 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

शोध उपकरण

परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु आवश्यक उपकरण में प्रमापीकृत संवेगात्मक परिपक्वता मापनी (डॉ. यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव द्वारा निर्मित) का प्रयोग किया गया।

पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से गुप्ता एस. पी. (2003)[1], सिंह, एम. पी. (1988)[2], वर्मा एस.जी. (2009)[3], हेनरी, ई. गैरट (1986)[4], राय, पारसनाथ (2007)[5] और लाल रमन बिहारी एवं जोशी सुरेशचन्द्र (2006)[6] ने शोध विधि एवं प्रारंभिक शिक्षा के विकास में शाला प्रबंधन समिति का शैक्षिक विकास से सम्बन्धित कार्य किये है।

शोध क्षेत्र का परिचय

भारत के ह्रदय स्थल मध्यप्रदेश के पूर्वोत्तर में विन्ध्य उपाधिकाओं के बीच सीधी जिला स्थित है। प्रारंभ में यह सिद्धी सम्प्रदाय के शासकों द्वारा शासित रहा। सीधी प्राचीनकाल में शैव साधकों की शरणास्थली रहा। इस बात की पुष्टि चुरहट स्थित सन्यासियों की कोठी, यहाँ के पुरातत्व, वास्तुशिल्प एवं प्राचीन मंदिर इस मूर्तियों के द्वारा होती है।

कालान्तर में यह क्षेत्र चौहानों के अधीनस्थ रहा, जो कुछ काल तक स्वतन्त्र एवं बाद में रीवा राज्य के बघेल शासकों के अधीन रहकर शासन करते रहे। 1 अप्रैल 1949 तक यह जिला बघेलखण्ड रियासत के अन्तर्गत था एवं रियासतों के विलीनीकरण के पश्चात विंध्यप्रदेश के अन्तर्गत हो गया। 1 नवम्बर 1956 में राज्य के पुर्नगठन के फलस्वरूप मध्यप्रदेश राज्य का निर्माण हुआ, तो यह जिला मध्यप्रदेश के रीवा संभाग का एक जिला हो गया। यहाँ सोनभद्र नदी एवं बनास नदी के संगम स्थल पर भमरसेन के निकट चन्दरेह में प्राचीन शिव मंदिर है, जो 5 वीं सदी का है। इसकी वास्तुकला अद्वितीय है। इसके साथ ही एक प्राचीन शिव मंदिर है, जो 5 वीं सदी का है। इसकी वास्तुकला अद्वितीय है। इसके साथ ही एक प्राचीन शिवमठ है जो उस समय का धार्मिक, सांस्कृतिक एवं शिक्षा का केन्द्र था। इसके अतिरिक्त यहाँ लुरघुटी का किला, बढ़ौरा का शिव मन्दिर एवं कलचुरि का विश्राम गृह दर्शनीय है।

सीधी जिले का भौगोलिक परिदृश्य

सीधी जिला मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी भाग $23^0 47'$ से $24^0 42'$ तक उत्तरी अक्षांश और $81^0 18'$ से $82^0 40'$ तक पूर्वी देशान्तर में स्थित है। जिले की पूर्व से पश्चिम की लम्बाई 155 कि.मी. तथा उत्तर से

दक्षिण 95 कि.मी. है। इसका कुल क्षेत्रफल 10532 वर्ग कि.मी. है। जिले के पूर्व में सिंगरौली, दक्षिण–पश्चिम में शहडोल, सतना दक्षिण में छत्तीसगढ़ का कोरिया जिला तथा उत्तर में रीवा जिला स्थित है।

तापमान, वर्ष एवं जलवायु

सीधी जिले का अधिकतम तापमान मई जून से 45.46^0 से0 तथा न्यूनतम तापमान माह दिसम्बर–जनवरी में 5^0 से0ग्रे0 तक रहता है। जिले मे औसत वर्षा 950 मिलीमीटर से 1250 मि0मी0 तक होती है। जिले की जलवायु सामान्यतः समशीतोष्ण है। ग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्मी तथा शीत ऋतु में अधिक सर्दी पड़ती है।

नदी, पहाड़ एवं मिट्टी

जिले की सबसे बड़ी नदी सोन है। बनास, गोपद एवं रिहन्द इसकी सहायक नदियाँ हैं। ये समस्त नदिया सोन, बेसिन के अन्तर्गत आती हैं। जिले के मैदानी भागों की मिट्टी उपजाऊ है, किन्तु पर्वतीय क्षेत्र की मिट्टी कम उपजाऊ तथा हल्के किस्म की है।

भू–रचना के आधार पर सीधी जिले को मुख्य रूप से 3 भागों में विभक्त किया गया है–

1. उत्तर की कैमोर श्रेणियाँ
2. मध्य सोन घाटी
3. दक्षिण की मझौली मड़वास पठार

जनगणना एवं लिंगानुपात

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार सीधी जिले की जनसंख्या 1127033 है, जो जिले में वृद्धि 23.72 प्रतिशत है। जिले में पुरुष जनसंख्या वृद्धि 22.74 प्रतिशत व महिला 24.75 प्रतिशत है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 1: सीधी जिले में ग्रामीण एवं शहरी छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व विकास प्राप्ताकों के मध्यमान अन्तर की सार्थकता

	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान का अंतर	क्रातिक अनुपात	सार्थकता का स्तर 0.01=2.65 & 0.05=2.00
ग्रामीण	25	31.80	8.35	2.40	1.04	सार्थक अन्तर है।
शहरी	25	29.40	8.04			

df = (25-1) + (25-1) = 24+24 =48

सारणी से स्पष्ट होता है, कि प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 31.80 व 29.40 है। मानक विचलन 8.35 व 8.04 है तथा मध्यमान के अन्तर द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात 1.04 है, जो सार्थकता स्तर 48 d.f. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.65 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 2.00 है जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान 1.04 है, जो कि दोनों विश्वास स्तरों के मानों से कम है, जो यह दर्शाता है कि सीधी जिले में ग्रामीण एवं शहरी छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व विकास सार्थक अन्तर है।

अतः परिकल्पना क्रमांक 1 सत्यापित होती है।

सारणी 2: सीधी जिले में छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व विकास में अध्यापक शिक्षा की भूमिका में सार्थक सहः सम्बन्ध की सार्थकता

क्र.स.	प्रपत्र	मध्यमान (M)	N	r
1.	व्यक्तित्व विकास	31.80	25	0.964
2.	भूमिका	29.40	25	

सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर व्यक्तित्व विकास का मध्यमान 31.80 एवं छात्राध्यापक 25 है तथा भूमिका का मध्यमान 29.40 एवं छात्राध्यापक 25 है। इनके मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक तंत्र 0.964 है। प्राप्त परिणाम के अनुसार व्यक्तित्व एवं भूमिका में निम्न स्तर का धनात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया।

अतः हमारी परिकल्पना 2 अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

1. सीधी जिले में ग्रामीण एवं शहरी छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व विकास में सार्थक अन्तर है।
2. सीधी जिले में छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व विकास में अध्यापक शिक्षा की भूमिका में सार्थक सहःसम्बन्ध नही पाया गया।

संदर्भ

1. गुप्ता एस. पी. ''सांख्यिकीय विधियां'' शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, (2003).
2. सिंह, एम. पी. सांख्यिकीय सिद्धांत एवं व्यवहार, एस. चन्द्र एण्ड कम्पनी, दिल्ली (1998)
3. वर्मा एस.जी. ''अधिगम का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का मनोविज्ञान'' – संस्करण–2010 इंडियन साइकोलोजीकल रीब्यू : (2009) बैलूम नं. 73
4. हेनरी, ई. गैरट, ''शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग,'' 10 वॉ संस्करण, कल्याणी प्रकाशन (1986).
5. राय, पारसनाथ, अनुसंधान–परिचय, आगरा : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल (2007).
6. लाल रमन बिहारी एवं जोशी सुरेशचन्द्र, ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारंभिक सांख्यिकीय'' आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ (2006).